कार्यालय आयुक्त
गन्ना एवं चीनी, उत्तर प्रदेश।
17 न्यू बेरी रोड डालीबाग, लखनऊ।

पत्रांकः कै/879 /विकास अनुभाग/लखनऊ दिनांकः 21-07-2020

निदेशक,
उ.प्र. गन्ना शोध परिषद,
शाहजहॉपुर।

विषयः गन्ना शोध केन्द्र अमहट (सुल्तानपुर) तथा कटयां सादात (गाजीपुर) पर ट्रायल के तौर पर भूगरूं प्रणाली शूरू किये जाने के संबंध में।

कृपया दैनिक समाचार-पत्र अमर उजाला में भूगंरू पद्धति के बारे में प्रकाशित समाचार (छाया प्रति संलग्न) का अवलोकन करने का कष्ट करें। प्रकाशित समाचार में उल्लेख किया गया है कि ऊसर एवं हार्डपैन वाली कृषि भूमि पर इस पद्धति को अपना कर वाटर हारवेस्टिंग द्वारा अच्छे परिणाम प्राप्त किये गये है।

उल्लेखनीय है कि भूगरूं प्रणाली वाटर हारवेस्टिंग की एक पद्धति है जिसमें खेतों में निचले स्थान पर कंकरीट का एक घेरा बनाया जाता है और बीच में बोरिंग के माध्यम से यथा-आवश्यक 10 से 15 फिट की एक पाईप भूमि में डाल दी जाती है जिसके माध्यम से वर्षा के दिनों में वर्षा का पानी इकट्ठा होकर भूमि में रिचार्ज हो जाता है। इस जल को आवश्यकता पड़ने पर अन्य दिनों में पम्प कर खेती के लिए उपयोग किया जाता है। यह पद्धति परम्परागत रूप में गुजरात के कई क्षेत्रों में प्रचलित है, श्री विप्लब केतन पाल द्वारा इस पद्धति को विस्तृत रूप में तेलंगाना, आन्ध्रप्रदेश तथा अन्य प्रदेशों में प्रयोग किया जा रहा है। यह पद्धति प्रायः उन क्षेत्रों के लिए बहुत उपयोगी है जहॉ वर्षा का पानी, ऊसर प्रभावित क्षेत्रों में हार्डपैन बन जाने अथवा ढलान वाले क्षेत्रों में रिचार्ज नही हो पाने के कारण बहाव के माध्यम से नष्ट हो जाता है।

गन्ना खेती में पानी की बचत एवं वाटर हारवेस्टिंग की सम्भावनाओं के दृष्टिगत अनुरोध है कि गन्ना शोध केन्द्र अमहट (सुल्तानपुर) तथा कटयां सादात (गाजीपुर) में ट्रायल के तौर पर भूगरूं प्रणाली स्थापित कराकर गन्ने की खेती के सन्दर्भ में भूगंरू प्रणाली की उपयोगिता से सम्बन्धित परिणामों/रिपोर्ट्स को इस कार्यालय को उपलब्ध कराने का कष्ट करें, जिससे कि प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में इसके प्रयोग पर विचार किया जा सके ।

(संजय आर. भूसरेड्डी)
आयुक्त
गन्ना एवं चीनी उ.प्र.